विद्यालय स्तर पर समग्र शिक्षा के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत नवाचारों का कार्यान्वयन

डॉ. प्रभाकर पाण्डेय*

सारांश -

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) के तहत प्रस्तावित नवाचारों ने भारतीय शिक्षा प्रणाली को एक नया दृष्टिकोण प्रदान किया है। समग्र शिक्षा ने छात्रों के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, और नैतिक विकास को सुनिश्चित करने की दिशा में ठोस कदम उठाए हैं। बहुभाषिक शिक्षा ने छात्रों को उनकी सांस्कृतिक पहचान से जोड़ा और उन्हें अधिक आत्मविश्वासी बनाया। नैतिक और जीवन कौशल शिक्षा ने छात्रों में जिम्मेदारी, नेतृत्व क्षमता, और सहनशीलता जैसे गुणों को विकसित किया। मूल्यांकन प्रणाली में सुधार के माध्यम से छात्रों के समग्र विकास को आंका गया, जबकि प्रौद्योगिकी के उपयोग ने शिक्षा की पहुँच और गुणवत्ता को बढ़ाने में सहायक भूमिका निभाई। सामुदायिक भागीदारी ने विद्यालयों को स्थानीय समुदायों और अभिभावकों के साथ जोड़कर शिक्षा में संसाधन और नवाचार को बढ़ावा दिया। यह नीति केवल वर्तमान शिक्षा प्रणाली की चुनौतियों को हल करने तक सीमित नहीं है, बल्कि भविष्य में शिक्षा के लिए एक प्रगतिशील और समावेशी दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। NEP 2020 ने शिक्षा को एक सशक्त और व्यावहारिक माध्यम में परिवर्तित किया है, जो न केवल छात्रों को उनकी पूरी क्षमता तक पहुँचने में मदद करता है, बल्कि समाज और राष्ट्र के विकास में भी योगदान देता है। इस शोध अध्ययन के माध्यम से NEP 2020 के अनुसार समग्र शिक्षा के स्वरूप को स्पष्ट कर उसके कार्यान्वायन पर व्यापक विमर्श को प्रस्तुत करना है।

कुञ्जी शब्द - राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, NEP 2020, नवाचार, भारतीय शिक्षा प्रणाली, समग्र शिक्षा, शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक विकास, बहुभाषिक शिक्षा, कौशल शिक्षा, नेतृत्व क्षमता, सहनशीलता, मूल्यांकन प्रणाली, प्रौद्योगिकी।

समग्र शिक्षा का स्वरूप -

समग्र शिक्षा का तात्पर्य छात्रों के शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, बौद्धिक, और नैतिक विकास के बीच संतुलन स्थापित करना है। यह शिक्षा का एक ऐसा दृष्टिकोण है जो छात्रों

को केवल शैक्षणिक ज्ञान प्रदान करने तक सीमित नहीं रहता, बल्कि उनके जीवन कौशल, सांस्कृतिक चेतना, नैतिक मूल्यों, और रचनात्मकता को भी बढ़ावा देता है। NEP 2020 में समग्र शिक्षा को शिक्षा के हर स्तर पर लागू करने की प्राथमिकता दी गई है। इस नीति में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि "शिक्षा का उद्देश्य न केवल छात्रों को उनकी पूरी क्षमता तक पहुँचाना है, बल्कि उन्हें नैतिक, करुणाशील, और जागरूक नागरिक बनने के लिए सक्षम बनाना भी है।"[1] समग्र शिक्षा का मूल उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि छात्रों का विकास बहुआयामी हो। NEP 2020 के अनुसार, "समग्र शिक्षा छात्रों की बौद्धिक, सौंदर्यबोध, सामाजिक, शारीरिक, भावनात्मक और नैतिक क्षमताओं के विकास पर केंद्रित है, जिससे वे एक संतुलित और जिम्मेदार व्यक्ति बन सकें।"[2] इस दृष्टिकोण के तहत छात्रों को केवल पाठ्यक्रम आधारित शिक्षा तक सीमित न रखकर, उनके व्यवहार, सामाजिक जिम्मेदारी, और आत्मविश्वास को भी विकसित करने पर बल दिया जाता है। नीति में यह भी सिफारिश की गई है कि पाठ्यक्रम को बहुआयामी बनाया जाए, जिसमें कला-समेकित शिक्षण, खेल आधारित शिक्षा, और नैतिक मूल्यों का समावेश हो। उदाहरण के लिए, कला-समेकित शिक्षण के माध्यम से छात्रों की रचनात्मकता और कल्पनाशीलता को बढ़ावा दिया जा सकता है। यूनेस्को द्वारा प्रकाशित *'ए फ्रेमवर्क फ़ॉर कल्चर एंड आर्ट एजुकेशन'* में इसे स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि "कला और रचनात्मक गतिविधियाँ छात्रों की आलोचनात्मक सोच और सांस्कृतिक समझ को बढ़ाने में सहायक होती हैं।"[3]

इस प्रकार NEP 2020 में समग्र शिक्षा को एक ऐसा साधन माना गया है जो छात्रों को न केवल शैक्षणिक रूप से बल्कि सामाजिक और नैतिक रूप से भी सशक्त बनाता है। यह दृष्टिकोण शिक्षा को व्यावहारिक, प्रासंगिक और समावेशी बनाकर छात्रों को उनकी पूरी क्षमता तक पहुँचने के लिए सक्षम बनाता है। जैसा कि नीति में कहा गया है, "शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगारोन्मुखी होना नहीं है, बल्कि छात्रों को एक अच्छे इंसान बनने और समाज में सकारात्मक योगदान देने के लिए तैयार करना है।"[4]

विद्यालय स्तर पर नवाचार और उनका कार्यान्वयन -

NEP 2020 ने शिक्षा को छात्रों के समग्र विकास के लिए एक प्रभावी साधन बनाने पर जोर दिया है। इसके तहत विद्यालय स्तर पर विभिन्न नवाचारों को लागू करने का उद्देश्य शिक्षा को अधिक व्यावहारिक, समावेशी और छात्र-केंद्रित बनाना है। कला-समेकित शिक्षा, खेल-आधारित शिक्षा, बहुभाषिकता, और नैतिक मूल्यों का समावेश जैसे नवाचार छात्रों को

[1] राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, पृ.4।

[2] राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भाग 4.4।

[3] *ए फ्रेमवर्क फ़ॉर कल्चर एंड आर्ट एजुकेशन*, यूनेस्को 211EX/39, 2021, पृष्ठ 1-2।

[4] राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, भाग 1.2।

उनकी पूरी क्षमता तक पहुँचने में सहायक हैं। यह पहल न केवल शिक्षण प्रक्रिया को अधिक रोचक और प्रभावी बनाती है, बल्कि छात्रों के व्यक्तिगत, सामाजिक और बौद्धिक विकास को भी सुनिश्चित करती है। इन नवाचारों का वर्णन इस प्रकार है -

समग्र पाठ्यचर्या का विकास -

छात्रों के शैक्षणिक ज्ञान के साथ-साथ उनके रचनात्मक और आलोचनात्मक सोच कौशल के विकास हेतु शिक्षण और पाठ्यक्रम को बहुआयामी और व्यावहारिक बनाने पर बल दिया जाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार, "शिक्षा केवल स्मृति और ज्ञान तक सीमित नहीं होनी चाहिए; यह अनुभव और समझ पर आधारित होनी चाहिए, जिससे छात्रों में जिज्ञासा, रचनात्मकता और समस्या-समाधान क्षमता विकसित हो।"[5] इसके लिए पाठ्यक्रम में कला-समेकित शिक्षा और खेल-आधारित शिक्षा जैसे नवाचारों को शामिल किया गया है। कला-समेकित शिक्षा का उद्देश्य छात्रों के सीखने के अनुभव को रुचिकर और व्यावहारिक बनाना है। इसके तहत संगीत, नृत्य, चित्रकला, नाट्यकला जैसी कलाओं को शैक्षणिक विषयों के साथ जोड़ा जाता है, जिससे छात्रों में रचनात्मक और आलोचनात्मक सोच विकसित होती है। उदाहरण के लिए, कक्षा 6 से 8 के पाठ्यक्रम में सांस्कृतिक और स्थानीय कलाओं को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जा सकता है, जिससे छात्रों की सांस्कृतिक जागरूकता के साथ-साथ उनके संज्ञानात्मक और भावनात्मक कौशल का भी विकास हो।[6] इसी प्रकार, खेल-आधारित शिक्षा को शारीरिक और मानसिक विकास के लिए एक आवश्यक घटक के रूप में जोड़ा गया। NEP 2020 का कहना है कि "शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य शिक्षा का अभिन्न हिस्सा है। खेलकूद से छात्रों में अनुशासन, टीम वर्क, और नेतृत्व क्षमता विकसित होती है।"[7] इस दृष्टि को साकार करने के लिए CBSE ने 'फिट इंडिया मूवमेंट' के तहत विद्यालयों में खेलकूद और शारीरिक गतिविधियों को अनिवार्य किया।[8]

समग्र पाठ्यचर्या का यह दृष्टिकोण छात्रों को केवल अकादमिक विषयों तक सीमित नहीं रखता, बल्कि उन्हें जीवन कौशल और व्यवहारिक ज्ञान प्रदान करता है। कला और खेल जैसे तत्व छात्रों की रचनात्मकता, सामाजिक जिम्मेदारी और शारीरिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में सहायक होते हैं। यह दृष्टिकोण न केवल शिक्षा को अधिक प्रभावी और समावेशी बनाता है, बल्कि छात्रों को उनकी पूरी क्षमता तक पहुँचने में भी सक्षम बनाता है।

बहुभाषिक शिक्षा का समावेश - यह एक स्थापित तथ्य है कि प्रारंभिक शिक्षा में मातृभाषा या स्थानीय भाषा को शिक्षण का माध्यम बनाया जाना चाहिए। इस दृष्टिकोण का

---

[5] राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भाग 4.4।

[6] कला समेकित अधिगम दिशानिर्देश एनसीईआरटी, 2019, पृष्ठ 26-27।

[7] राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, भाग 4.6।

[8] *सीबीएसई सर्कुलर ऑन स्पोर्ट्स एंड वेल-बीइंग*, सीबीएसई, 2022।

उद्देश्य छात्रों की शिक्षा को अधिक प्रभावी और समावेशी बनाना है। मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करने से न केवल छात्रों की बौद्धिक क्षमताओं का विकास होता है, बल्कि उनकी सांस्कृतिक पहचान भी मजबूत होती है। NEP 2020 में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है, "शिक्षा का माध्यम कम से कम कक्षा 5 तक मातृभाषा, स्थानीय भाषा या क्षेत्रीय भाषा होना चाहिए और जहाँ तक संभव हो, इसे कक्षा 8 या उससे आगे तक बढ़ाया जा सकता है।"[9] बहुभाषिक शिक्षा छात्रों को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़े रखने का कार्य करती है। स्थानीय भाषा में शिक्षण से बच्चे अधिक सहजता से विषय-वस्तु को समझ पाते हैं और अपनी रचनात्मक एवं तार्किक क्षमताओं को बेहतर ढंग से विकसित कर सकते हैं। इसके साथ ही, यह शिक्षा प्रणाली छात्रों को अन्य भाषाओं को सीखने के लिए भी प्रेरित करती है, जिससे उनमें बहुभाषिकता का विकास होता है। NEP 2020 के अनुसार, "प्रारंभिक शिक्षा में मातृभाषा या स्थानीय भाषा में शिक्षा देने से बच्चे जटिल अवधारणाओं को जल्दी समझ पाते हैं और उनकी शिक्षा में गहरी रुचि उत्पन्न होती है।"[10] उदाहरणस्वरूप, कर्नाटक और ओडिशा जैसे राज्यों में कई सरकारी स्कूलों ने अपनी स्थानीय भाषाओं में पाठ्यक्रम को लागू किया है। इस प्रयास से छात्रों की भागीदारी और प्रदर्शन में सकारात्मक सुधार देखा गया है। NCERT की एक रिपोर्ट के अनुसार, "मातृभाषा में शिक्षण से छात्रों की भाषा क्षमता और विचार प्रक्रिया में स्पष्टता आती है, जिससे उनका समग्र विकास होता है।"[11]

इसके अतिरिक्त, बहुभाषिक शिक्षा केवल छात्रों की भाषा दक्षता तक सीमित नहीं रहती, बल्कि उनके भावनात्मक और सामाजिक विकास में भी सहायक होती है। यह छात्रों के समुदाय और समाज के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित करने में मदद करती है, जिससे वे अधिक आत्मविश्वासी और जागरूक नागरिक बनते हैं।

इस प्रकार बहुभाषिक शिक्षा NEP 2020 के उन प्रमुख नवाचारों में से एक है, जो छात्रों के संज्ञानात्मक और सामाजिक विकास को बढ़ावा देती है। यह शिक्षण पद्धति न केवल शिक्षा को सुलभ और समावेशी बनाती है, बल्कि छात्रों की सांस्कृतिक और भाषाई विविधता को भी संरक्षित करती है। मातृभाषा में शिक्षा का यह मॉडल बच्चों के लिए शिक्षा को अधिक सहज और उपयोगी बनाने की दिशा में एक प्रभावी कदम है।

नैतिक और जीवन कौशल शिक्षा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षा को एक ऐसा माध्यम बनाने पर बल दिया है, जो छात्रों के नैतिक और जीवन कौशल विकास को बढ़ावा दे। नीति के अनुसार, "शिक्षा केवल शैक्षणिक ज्ञान देने तक सीमित नहीं होनी चाहिए; यह छात्रों में नैतिकता, सामाजिक जिम्मेदारी,

[9] राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भाग 4.11।

[10] राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भाग 4.12।

[11]समझ का माध्यम, एनसीईआरटी, 2010, पृष्ठ 13।

और सामुदायिक चेतना का विकास करने का साधन भी होनी चाहिए।"[12] नैतिक मूल्यों का शिक्षण इस नीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसमें छात्रों को ईमानदारी, सहिष्णुता, करुणा, और पर्यावरणीय जागरूकता के प्रति संवेदनशील बनाने पर जोर दिया गया है। उदाहरण के लिए, NCERT द्वारा "पर्यावरण शिक्षा" कार्यक्रम के तहत छात्रों को पर्यावरण के संरक्षण और उसके प्रति जिम्मेदारी समझाने का प्रयास किया गया। यह पहल छात्रों को व्यक्तिगत और सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करने में सहायक रही है।[13] जीवन कौशल शिक्षा छात्रों को व्यवहारिक और व्यावसायिक जीवन में बेहतर निर्णय लेने और समस्याओं का समाधान करने की क्षमता विकसित करने में मदद करती है। NEP 2020 के अनुसार, "छात्रों को संचार कौशल, नेतृत्व क्षमता, और सहनशीलता जैसे गुणों को आत्मसात करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।"[14] स्कूलों में कार्यशालाएँ, सामूहिक चर्चा और सामुदायिक सेवा परियोजनाएँ छात्रों के जीवन कौशल को बढ़ाने के लिए प्रभावी साधन के रूप में काम कर रही हैं। उदाहरण के लिए, 'स्कूल नेतृत्व कार्यक्रम' ने छात्रों में नेतृत्व क्षमता विकसित करने और उन्हें सामाजिक संदर्भों में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया है। इन पहलों के माध्यम से छात्रों को आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास के साथ सामाजिक समस्याओं का समाधान करने का अवसर मिलता है।[15]

इस प्रकार, नैतिक और जीवन कौशल शिक्षा छात्रों के समग्र विकास को सुनिश्चित करती है। यह न केवल उन्हें बेहतर इंसान बनाती है, बल्कि उन्हें समाज के प्रति अधिक संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए भी प्रेरित करती है। NEP 2020 ने शिक्षा प्रणाली को एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान किया है, जो छात्रों के व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने की क्षमता रखता है।

मूल्यांकन प्रणाली में सुधार

मूल्यांकन प्रणाली में व्यापक सुधार अत्यंत आवश्यक है, जिससे यह अधिक समग्र और छात्र-केंद्रित बन सके। NEP 2020 के अनुसार, "मूल्यांकन को केवल अंक और रैंक तक सीमित नहीं होना चाहिए; इसे एक समग्र दृष्टिकोण अपनाना चाहिए जो छात्रों की क्षमता, ज्ञान, और कौशल के विकास पर केंद्रित हो।"[16] इसके तहत मूल्यांकन को एक संक्षेपात्मक (summative) प्रणाली से परिवर्तित करके एक सक्रिय और प्रगतिशील (formative) पद्धति में बदलने की सिफारिश की गई है। यह परिवर्तन केवल अकादमिक प्रदर्शन का आकलन करने

[12] राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भाग 4.4।

[13] https://ncert.nic.in/pdf/publication/otherpublications/Framework_educationCOMPLETEBOOK.pdf

[14] राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, अध्याय 4.5।

[15] https://itpd.ncert.gov.in/mss/course_content/Module%2014.pdf

[16] राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भाग 4.35।

तक सीमित नहीं है, बल्कि छात्रों के व्यक्तिगत गुणों और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों का भी आकलन करता है।

NEP 2020 ने इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए 360-डिग्री रिपोर्ट कार्ड की अवधारणा प्रस्तुत की। यह रिपोर्ट कार्ड छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन के साथ-साथ उनके सह-पाठ्यक्रम कौशल, जैसे कला, खेल, रचनात्मकता, नेतृत्व क्षमता, और उनके व्यक्तिगत गुणों का समग्र मूल्यांकन करता है। यह प्रणाली शिक्षकों, अभिभावकों और छात्रों को मूल्यांकन प्रक्रिया का सक्रिय भागीदार बनाती है। इसके तहत छात्रों को उनके प्रदर्शन और विकास पर गहराई से समझने का अवसर मिलता है। नीति में कहा गया है, "मूल्यांकन प्रणाली का उद्देश्य केवल प्रदर्शन मापना नहीं, बल्कि छात्रों को उनकी प्रगति के लिए प्रेरित करना और उनके सीखने की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाना है।"[17] कई स्कूलों ने इस नई मूल्यांकन प्रणाली को अपनाते हुए रिपोर्ट कार्ड में सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों और छात्रों की व्यक्तिगत प्रगति का समावेश किया है। इस प्रकार 360-डिग्री रिपोर्ट कार्ड छात्रों को उनकी शैक्षिक और सामाजिक उपलब्धियों का समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है, जो उनकी व्यक्तिगत और शैक्षणिक प्रगति के लिए अत्यंत सहायक है। इस प्रणाली का उद्देश्य केवल छात्र के प्रदर्शन को मापने तक सीमित नहीं है, बल्कि उसे व्यक्तिगत, सामाजिक और भावनात्मक विकास में मार्गदर्शन देना भी है। इस नई मूल्यांकन पद्धति ने छात्रों की शिक्षा को एक अधिक समग्र और प्रगतिशील दिशा में ले जाने का प्रयास किया है।

प्रौद्योगिकी का उपयोग

आज शिक्षा में प्रौद्योगिकी के उपयोग को एक अनिवार्य घटक के रूप में स्वीकार किया जाता है। इसका उद्देश्य शिक्षा की पहुँच और गुणवत्ता को बढ़ाना है, विशेषकर उन परिस्थितियों में जहाँ पारंपरिक शिक्षण विधियाँ सीमित हैं। NEP 2020 में प्रौद्योगिकी के उपयोग को शिक्षा को अधिक समावेशी, प्रभावी और प्रगतिशील बनाने के लिए एक साधन के रूप में प्रस्तुत किया गया है। COVID-19 महामारी के दौरान शिक्षा प्रणाली में आई चुनौतियों ने प्रौद्योगिकी के महत्व को और अधिक स्पष्ट कर दिया। इस दौरान डिजिटल शिक्षण माध्यमों का बड़े पैमाने पर उपयोग किया गया, जैसे कि 'DIKSHA' पोर्टल और 'SWAYAM' प्लेटफ़ॉर्म। डिजिटल शिक्षण के तहत 'DIKSHA' पोर्टल ने शिक्षकों और छात्रों को डिजिटल शिक्षण सामग्री प्रदान करके शिक्षा की निरंतरता बनाए रखने में अहम भूमिका निभाई। इस पोर्टल ने न केवल छात्रों को ऑनलाइन पाठ्यक्रम उपलब्ध कराए, बल्कि शिक्षकों को उनकी दक्षता बढ़ाने के लिए प्रशिक्षण सामग्री भी प्रदान की। इसके साथ ही, 'SWAYAM' प्लेटफ़ॉर्म ने उच्च शिक्षा के लिए ऑनलाइन पाठ्यक्रम और संसाधन उपलब्ध कराए, जिससे छात्रों को अपनी पढ़ाई में लचीलापन और गुणवत्ता दोनों का लाभ मिला। एक रिपोर्ट के अनुसार, "DIKSHA और

[17]राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, भाग 4.36।

SWAYAM ने भारत में डिजिटल शिक्षण को सुलभ और प्रभावी बनाने में उल्लेखनीय योगदान दिया।"[18] इसके अलावा, प्रौद्योगिकी के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए एडुटेक टूल्स जैसे डिजिटल बोर्ड्स, स्मार्ट क्लासरूम और ई-लर्निंग प्लेटफ़ॉर्म का उपयोग किया गया। स्मार्ट क्लासरूम ने शिक्षा को अधिक संवादात्मक और रुचिकर बना दिया, जहाँ शिक्षक और छात्र दोनों डिजिटल सामग्री का उपयोग करके सीखने के अनुभव को समृद्ध बना सकते हैं। NEP 2020 के अनुसार, "डिजिटल टूल्स का उपयोग शिक्षा में समावेशिता और गुणवत्ता सुनिश्चित करने का एक शक्तिशाली माध्यम है।"[19]

इस प्रकार प्रौद्योगिकी ने शिक्षा को अधिक प्रगतिशील और लचीला बनाया है। डिजिटल शिक्षण और एडुटेक टूल्स ने छात्रों और शिक्षकों के लिए नए अवसर और संसाधन प्रदान किए हैं, जिससे सीखने की प्रक्रिया अधिक प्रभावी और समावेशी हो गई है। NEP 2020 के तहत प्रौद्योगिकी का यह समावेश न केवल वर्तमान शिक्षा प्रणाली की आवश्यकताओं को पूरा करता है, बल्कि भविष्य में शिक्षा के नवाचारों को भी प्रेरित करता है।

सामुदायिक भागीदारी

शिक्षा में सामुदायिक भागीदारी को सशक्त बनाने के लिए NEP 2020 में विशेष जोर दिया गया है। यह मान्यता दी गई है कि शिक्षा व्यवस्था को अधिक प्रभावी और समावेशी बनाने के लिए विद्यालयों, स्थानीय समुदायों और अभिभावकों के बीच सहयोग महत्वपूर्ण है। सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से विद्यालय प्रबंधन और शिक्षण प्रक्रियाओं में नवाचार लाने के प्रयास किए गए हैं। उदाहरण के लिए, "स्कूल प्रबंधन समितियाँ" को अधिक प्रभावी बनाया गया, जहाँ अभिभावक, शिक्षक और समुदाय के सदस्य स्कूल विकास योजनाओं और क्रियान्वयन में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। इसके अतिरिक्त, ग्राम पंचायतों ने स्कूलों में बुनियादी सुविधाएँ उपलब्ध कराने में अहम योगदान दिया है। MHRD की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि "सामुदायिक भागीदारी ने स्कूल प्रबंधन और संसाधन वितरण में सुधार लाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।"[20]इसके साथ ही, समग्र शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए जमीनी स्तर पर कई नवाचार लागू किए गए। 'विद्या प्रवेश' कार्यक्रम के तहत बाल मनोविज्ञान आधारित अनुकूलन प्रक्रियाओं को प्रारंभिक शिक्षा में लागू किया गया, जिससे बच्चों को सहज और प्रभावी शिक्षण अनुभव प्राप्त हो सके। इसके अलावा, 'स्मार्ट विलेज स्कूल प्रोजेक्ट' जैसी पहलों ने ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल शिक्षा को प्रोत्साहित किया। इस प्रकार सामुदायिक भागीदारी ने शिक्षा में न केवल संसाधन बढ़ाने में योगदान दिया है, बल्कि छात्रों के समग्र

[18] इण्डिया रिपोर्ट डिजिटल एजुकेशन, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, 2021, पृष्ठ 10।

[19] राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, भाग 24.5।

[20] *एमएचआरडी रिपोर्ट ऑन कम्युनिटी पार्टिसिपेशन इन एजुकेशन*, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, 2020, पृष्ठ 12।

विकास और शिक्षकों के समर्थन में भी अहम भूमिका निभाई है। यह दृष्टिकोण शिक्षा को अधिक समावेशी, प्रासंगिक और सशक्त बनाता है, जिससे छात्र और समाज दोनों का विकास सुनिश्चित होता है।

निष्कर्ष

भारतीय शिक्षा प्रणाली को समग्र और समावेशी बनाने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाया है। इसका उद्देश्य शिक्षा को छात्रों के व्यक्तिगत, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास के साथ जोड़कर उन्हें एक जिम्मेदार नागरिक और सक्षम व्यक्ति बनाना है। समग्र शिक्षा के तहत, पाठ्यचर्या में कला-समेकित और खेल-आधारित शिक्षा को शामिल करके छात्रों की रचनात्मकता, शारीरिक फिटनेस, और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा दिया गया है। बहुभाषिक शिक्षा ने छात्रों को उनकी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ा, जिससे वे अधिक आत्मविश्वासी बने और विभिन्न भाषाओं में दक्षता प्राप्त की। नैतिक और जीवन कौशल शिक्षा ने छात्रों के व्यक्तित्व को सुदृढ़ किया, जहाँ ईमानदारी, सहिष्णुता, और सामुदायिक जिम्मेदारी जैसे गुणों का विकास हुआ। इसके साथ ही, 360-डिग्री रिपोर्ट कार्ड जैसी मूल्यांकन प्रणाली ने केवल शैक्षणिक प्रदर्शन तक सीमित न रहकर छात्रों की व्यक्तिगत और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों का समग्र मूल्यांकन किया। प्रौद्योगिकी के समावेश ने डिजिटल शिक्षा और एडुटेक टूल्स के माध्यम से शिक्षा की पहुँच और गुणवत्ता को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया। 'DIKSHA' और 'SWAYAM' जैसे प्लेटफ़ॉर्म ने शिक्षकों और छात्रों को शिक्षण सामग्री और प्रशिक्षण के लिए सतत संसाधन प्रदान किए। सामुदायिक भागीदारी ने शिक्षा को जमीनी स्तर पर मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्कूल प्रबंधन समितियों (SMC) और ग्राम पंचायतों की सक्रिय भागीदारी ने न केवल स्कूल प्रबंधन और संसाधन वितरण को सशक्त बनाया, बल्कि शिक्षा को समाज से गहराई से जोड़ने का कार्य किया। 'विद्या प्रवेश' और 'स्मार्ट विलेज स्कूल प्रोजेक्ट' जैसी पहलों ने ग्रामीण और वंचित क्षेत्रों में शिक्षा को सशक्त बनाया।

इस प्रकार NEP 2020 के तहत किए गए ये नवाचार न केवल वर्तमान शिक्षा प्रणाली की चुनौतियों को हल करने में सहायक रहे हैं, बल्कि उन्होंने भविष्य के लिए एक सशक्त और समावेशी शिक्षा प्रणाली की नींव भी रखी है। शिक्षा का यह दृष्टिकोण छात्रों को उनकी पूरी क्षमता तक पहुँचाने, उनके व्यक्तित्व को सुदृढ़ करने, और उन्हें समाज के लिए एक सकारात्मक बदलाव लाने वाला नागरिक बनाने में सहायक है। यह नीति शिक्षा के माध्यम से एक उज्जवल और समावेशी भारत का निर्माण करने का मार्ग प्रशस्त करती है।

*विभागाध्यक्ष, वैकल्पिक शिक्षा एवं समग्र विकास विभाग, साँची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय, साँची, रायसेन, मध्यप्रदेश।